भारतीय संस्कृति में और मूल्यों में कला की भूमिका स्पष्ट करने के लिए कुछ उदाहरण प्रस्तुत किए जा रहे हैं —

(1) स्वागत करना — फूलो का हार पहनाकर स्वागत करना भारतीय की प्रसिद्ध परम्परा है। भारतीय विवाहों में हार पहनाये जाते हैं। विभिन्न रंगों और विभिन्न प्रकार के फूलों से विभिन्न अवसर के सुन्दर मालाएँ गाँथी जाती है, जो भारतीय कला का बेजोड़ नमूना होती है।

(2) विवाह — भारत में विवाह एक संस्कृति है। विवाह में संगीत से परिपूर्ण वातावरण में वैवाहिक अनुष्ठान प्रतिपादित किए जाते है। भित्ति तथा भूमि पर विभिन्न मंगल प्रतीक चिन्ह बनाये जाते है। जिससे मानव हृदय की मूल भावना का विकास होता है। विवाह के आयोजन में वाद्य वृन्दो की

मिली - जुली व सामूहिक संगीत चमत्कारपूर्ण व आकर्षक होती है।

(3) भारतीय परिधान — भारतीय साड़ियाँ विश्व विख्यात हैं। देश की विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों की विशिष्ट पहचान वहाँ का परिधान देता है। कला के उत्कृष्ट नमूने परिधानों के माध्यम से विश्व के अन्य भू - भागों तक पहुँच गए हैं। हालांकि फिल्म टी. वी. आधुनिकीकरण सामाजिक परिवर्तन आदि ने भारतीय परिधानों पर अपना असर अवश्य डाला है फिर भी क्षेत्रीय परिधान भारतीय संस्कृति की कलात्मक निधि है। भारतीय संस्कृति में परिधानों के प्रति सर्वाधिक सजगता और संवेदनशीलता मिलती है। कुछ खास अवसर के परिधानों में रंगों और चित्रों का ऐसा जोड़ मिलता है कि कभी - कभी रंगों की तूलिका का सिद्धहस्त चित्रकार भी आश्चर्यचकित होकर अपनी सूझ - बूझ खो बैठता है।

(4) भारतीय आभूषण — आभूषण पहनना भारत की प्राचीन परम्परा है। भारत में आभूषण पहनने के लिए ही नहीं खरीदे जाते, ये बहुत अच्छे उपहार भी है। भारत में आभूषण एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तान्तरित होते हैं। खानदानी आभूषण कहते हैं, जो भारतीय संस्कृति की एक महत्वपूर्ण पक्ष को प्रकट करते है आभूषणों की अनुभव डिजाइन कलात्मक सौंदर्य और सृजनात्मक भारतीय संस्कृति और परम्परा को प्रस्तुत करते हैं।

(5) उत्सव व त्योहार — जनवरी से दिसम्बर तक हर माह में कोई न कोई उत्सव व त्योहार अवश्य होता है। मकर संक्रांति, बंसत पंचमी, होली, राम-नवमी, कृष्ण ~~जन्मा~~ जन्माष्टमी, ~~दीवा~~ दीपावली, ईद, महावीर जयन्ती, बुद्ध - पूर्णिमा, गुरु पूर्णिमा, क्रिसमस सभी त्योहारों पर कला की सुन्दर छटाएँ फैलती है।